सात महान संदेश हमारे अन्धकर भरे, निराशमय और पराजित जीवन पर नई रोशनी डालते है और आगे बढने मे उत्तेजन देते है। नकारात्मक विचारों को सकारात्मक विचारो मे बदलते है।

उत्पत्ति की पुस्तक मनुष्य के ६ महान प्रश्नो के उत्तर देती है।

1.परमेश्वर का सनातन होना।
2.परमेश्वर कहॉ से आया ?
3.पाप का आरम्भ कैसे हुआ ?
4.पापी मनुष्य परमेश्वर के पास वापस कैसे आ सकता है ?
5.मनुष्य परमेश्वर को कैसे प्रसन्न कर सकता है ? (अब्राहाम का विश्वास)
6.हम परमेश्वर और मनुष्य के साथ कैसे सामर्थ प्राप्त कर सकते है ? (याकूब का समर्पण)

यीशु मसीह सम्बन्धी संकेतः—

याद रखीए यीशु मसीह बाइबल का केन्द्रीय व्यक्ति है। वह बाइबल के प्रत्येक पृष्ठपर किसी न किसी प्रकार से विद्यमान है। उत्पत्ति कि किताब मे भी हम उसका प्रतीक और भविष्यवाणी के रूप मे देखते है।

1. स्त्री का वंश। उत्पत्ति 3:15
2.याकुब की सीढी। उत्पत्ति 28:12
3.यहूदा का राजदंण्ड। उत्पत्ति 49:10
4.सुरक्षा के जहाज मे प्रवेश। उत्पत्ति 17:1,7
5.इसहाक का बलि चढाना। उत्पत्ति 22:1—24
6.युसुफ का गडहे से सिहासन पहुँचना। उत्पत्ति 37:28, 41:41—44

कुलपति युग(Patriarchs)

कुलपति समस्त इतिहास मे भूमिका के रूप मे कार्य करता है। यह काल आदम से मूसा तक का है। मनुष्य के पतन के बाद परमेश्वर ने फिर अपने लोगो को अब्राहाम के द्वारा अलग किया और अपनी इब्रानी राष्ट की शुरूवात कि। कुलपतियों के नाम अब्राहाम, इसहाक, याकूब, युसुफ है। परमेश्वर ने जो वाचा अब्राहम के साथ बांधी उसे इसहाक और युसुफ के साथ दोहराया और यीशु मसीह के द्वारा (गलती 3:29) वही वाचा हम तक भी पहुँची। परमेश्वर इन बातो के द्वारा हमे आशीष दे।

निम्नलिखित छायाचित्र के द्वारा सम्पूर्ण उत्पत्ति का सर्वेक्षण कर सकते है।

	चार घटनाएँ				चार महान व्यक्ति			
संदर्भ	1:1—3:1—6:1—10:1—12:1				25:1—27:19—37:1—50:26			
विभाजन	सृष्टी	पतन	जलप्रलय	राष्ट	अब्राहाम	इसहाक	याकुब	युसुफ
विषय	मनुष्य जाती की दौड				इब्रानी जाति की दौड			
	एतिहासिक				जीवनी सम्बन्ध			
स्थापना	अदन — हारान				कनान हारान— कनान		मिस्त्र कनान — मिस्त्र	
समय	2000 वर्ष 4004 — 2090 ईसापूर्व				193 वर्ष 2090—1897 ईसापूर्व		93 वर्ष 1804 ईसापूर्व	

DISCIPLESHIP TRAINING CENTRE

Acts Foundation, Potter's House Church ,3rd Lane, Madhuban, Sangvi Pune- 27 Ph.9850833779 ;contact@actsministry.in

बाइबल सर्वेक्षण / Bible Survey

अंक:4 *Course-1* *Aug 2009* मुल्य:10 रू.

मित्रो,

नासरी प्रभु यीशु के नाम मे आपका एक बार फिर पाठयकम 1 बाइबल सर्वेक्षण कि इस श्रृखला मे मैं आपका स्वागत करता हुँ। अब तक हमने पिछले तीन श्रृखला में, बाइबल परिचय को देखा आज से हम पंचग्रथ, व्यवस्था, और पुराने नियम कि पहली पुस्तक उत्पत्ति का सर्वेक्षण करेंगे। इस पुस्तक कि शुरूवात होती है कुछ इस प्रकार से "आदि मे परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टी कि" उत्पत्ति 1:1

यदि इस किताब कि शुरूवात इस तरह से होती कि " कि एक समय कि बात है। तो यह एक कहानी की पुस्तक कहलाती परन्तु जब हम इसे शुरूवात से ही पढना शुरू करते है तो हमे इस बात कि कल्पना हो जाती है कि हम मानव जाति का इतिहास पढ रहे है।

आइए इस पहली किताब के बारे मे संक्षेप मे कुछ बातों को समझने कि कोशिश हम करते है। "उत्पत्ति" (अग्रेजी मे Genesis) यह नाम बाइबल कि पहली पुस्तक को यूं ही नही रख दिया गया। कई बार हम अपने बच्चों का नाम रखते समय कुछ सोचकर विचार कर के उनका नाम रखते है। बाइबल का अध्ययन करते समय हमे यह जानना जरूरी है कि बाइबल मे नामो कों बडा ही महत्व दिया गया है। "उत्पत्ति" यह नाम मुल युनानी भाषा से लिया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ है Origin or Generation, "आरम्भ" या वंश। अब आप सोचेंगे यह नाम इस किताब को क्यो दिया गया। जवाब बिल्कुल साफ है। इस किताब मे हम परमेश्वर को छोड प्रत्येक बातो का आरम्भ पाते है। इसी वजह से इसका नाम उत्पत्ति यानि आरम्भ कि पुस्तक रखा गया । साथ ही मे हम इसी किताब से वंशो का आरम्भ भी पाते है। जो मुल पुरूष आदम के द्वारा हुआ। दुसरी बात ध्यान देनेवाली यह है, कि पुस्तक आरम्भ की ही बाते करती है। यहॉ पर अन्तिम रूप नही दिया गया है।

लेखक :— इस पुस्तक का लेखक मूसा जो व्यवस्था का देनेवाला और इस्त्राएल का एक महान अगुवा था।

दिनांक और स्थान :— यह शायद तब लिखा गया जब लेखक अपने ससुर यित्रो के पास चरवाह था या तब जब इस्त्राएली मिस्त्र से निकलकर जंगल की यात्रा पर गए और जब परमेश्वर ने लेखक को सीनै पर्वत पर व्यवस्था दि।

Announcement

Praise & Worship Concert for breaking the boundages in FIRE CAMP 2009 on 15th August '09 at 7:00p.m. & also the inauguration of our New WEBSITE

लेखक के प्रमाण (Proof of Authorship)
:इस पुस्तक का लेखक मूसा ही है। इसके कई प्रमाण बाइबल ही मे उपलब्ध है। उनमे से चंद मे आपको बताना चाह रहा हुँ। पहली बात तो मैं यह बताना चाहता हु कि पहेली 5 किताबे यह व्यवस्था (Pentateuch)कि किताब एक साथ उपलब्ध थी। यह किताब पहले अलग–अलग नही हुआ करती थी। इब्रानी सिध्दान्त के अनुसार यहुदी इन्हे इकठ्ठा पढा करते थे। अब हमे यह बाइबल मे कही पर भी पता नही चलता कि उत्पत्ति मूसा ने लिखी थी। परन्तु यह अवश्य पता चलता है कि उसने आगे कि 4 किताबे निर्गमन, लेव्यव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण यह मूसा ने लिखी थी। क्योंकि इसकी आज्ञा खुद परमेश्वर ही ने मूसा को दि थी। (पढिए निर्गमन 17:14, 34:27)और मूसा ने इनको लिखना शुरू भी किया था, क्योंकि निर्गमन 24:5–7, गिनती 33:2 मे लिखा है कि मूसा ने वाचा कि पुस्तक को लोगो को पढकर सुनया। तो स्वाभाविक है कि इन चारो पुस्तक के साथ पहेली पुस्तक उप्तत्ति भी मूसाने ही लिखी है। क्योंकि यह पाचों एक ही किताब हुआ करती थी जिन्हे तोरह कहा गया।

विषय :– सृष्टी, पतन और यीशु मसीह के द्वारा उध्दार।

उद्देश :– पृथ्वी और स्वर्ग की निर्मिती और परमेश्वर को छोड प्रत्येक बातों की निर्मिती का वर्णन मनुष्य को दर्शाता है। साथ ही यह कि इन सब के पीछे केवल वह ही सामर्थशाली परमेश्वर था।

परिमान(Statistics):–
1. बाइबल की पहेली पुस्तक
2. 50 अध्याय
3. 1533 वचन
4. 38267 शब्द (अग्रेजी बाइबल)
5. सबसे छोटा अध्याय, 16
6. सबसे बडा अध्याय, 24
7. 95 बार परमेश्वर की स्पष्ट वाणी
8. 16 वे अध्याय मे 16 वचन
9. 32 वे अध्याय मे 32 वचन
10. 149 प्रश्न
11. 106 आज्ञा
12. 56 भविष्यवाणियॉ,
13. 71 वाचा (Promises)
14. 1156 अग्रेजी वचन 'And' (और) से शुरू होते है।

आइए कुछ और महत्वपूर्ण बाते हम उत्पत्ति के विषय मे देखते है। इस पुस्तक के नाम ' उप्तत्ति' का अर्थ "आरम्भ" है। इसे यह नाम इस लिए दिया गया क्योंकि इस पुस्तक मे हम करीबन हर बातों का आरम्भ देखते है। उनमे से 8 महत्वपूर्ण घटनाओं को मैं आपके सामने रखना चाहुंगा। आइए हम उन्हे देखते हुए इस किताब के नाम का अर्थ को देखते हुए परमश्वर की महीमा करे।

उत्पत्ति की पुस्तक "आरंम्भ" की पुस्तक है।

1. संसार का आरम्भ उत्पत्ति 1:1–25
2. मानव जाति का आरम्भ
   उत्पत्ति 1:26– 2:25
3. संसार मे पाप का आरम्भ
   उत्पत्ति 3:1–7
4. छुटकारे की प्रतिज्ञा का आरम्भ
   उत्पत्ति 3:8–24
5. पारिवारीक जीवन का आरम्भ
   उत्पत्ति 4:1–15
6. मानव सभ्यता का आरम्भ
   उत्पत्ति 4:16– 9:29
7. संसार के देशों का आरम्भ। उत्पत्ति 10,11
8. इब्रानी जाती का आरम्भ
   अध्याय 12 ते 50

कुछ और बातो को हम इस क्ताब में पाते है।
1.आदम ने परमेश्वर के साथ जीवन आरम्भ किया और अनाज्ञा के कारण उसका पतन हो गया। उत्पत्ति 3:1–27
2.हाबिल ने परमेश्वर के साथ बलिदान के लहु के द्वारा जीवन आरम्भ किया। उत्पत्ति 4:4
3.नूह ने जहाज बनाने के द्वारा परमेश्वर के साथ जीवन आरम्भ किया।
उत्पत्ति 6:8,14,22
4.अब्राहाम ने वेदी बनाने के द्वारा परमेश्वर के साथ जीवन आरम्भ किया।
उत्पत्ति 12:8

आश्चर्य की बात है उत्पत्ति का आरम्भ जीवन से होता है। उत्पत्ति 1:1 जब परमेश्वर ने आकाश की पृथ्वी को जीवन दिया वही उत्पत्ति के अन्तिम अध्याय 50 के अन्तिम वचन 26 मे हम मृत्यु को देखते है। जहॉ युसुफ की मृत्यु होती है।

इस पुस्तक मे हम तकरीबन 2286 पूर्व की कालावधी को पाते है। (कृपया छायाचित्र मे विस्तार से वर्षो का वर्गीकरण देखीए) यह अवधी किसी पुस्तक की अपेक्षा सबसे लम्बी है। वरण मैं यह कहना चाहुँगा कि यह अवधी बाकी 65 किताबो की अवधी को यदि हम जोड दे तो उससे भी अधिक है।

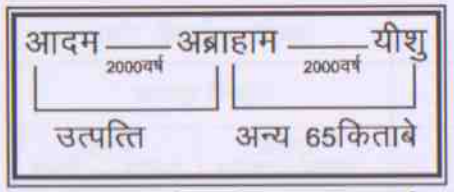

इस किताब को पढते वक्त महत्वपूर्ण नामों को याद रखकर पढिए।

1.आदम	5.अब्राहाम
2.हाबिल	6.इसाहाक
3.हनोक	7.याकूब
4.नूह	8.युसुफ

उत्पत्ति की किताब में चार महत्वपूर्ण घटनाएँ।
1.निर्मिती
2.पतन
3.बाढ
4.राष्ट

उत्पत्ति की क्ताब में चार महान व्यक्ति

1.अब्राहाम	3.याकुब
2.इसहाक	4.युसुफ

उत्पत्ति की किताब में ७ महान नाम और संदेश।
1.हाबिल के समान कुस के समीप दंडवत करना।
2.हनोक के समान कदम बढाना और परमेश्वर के साथ चलना।
3.परमेश्वर पर विश्वास करना और नूह के समान परमेश्वर के साथ पानी पर आगे बढना।
4.अब्राहाम के समान विश्वास से आगे बढना।
5. इसहाक के समान कुँए खोदना और ईश्वरीय सम्पत्ति गहराई तक ढूँढना।
6. याकूब के समान सीढी चढना और परमेश्वर को देखना।
7. युसुफ के समान सत्य होना और परमेश्वर के साथ रहना।

इस किताब मे जहॉ आदम के द्वारा हम पतन, पराजय और आशिषोंसे वंचित जीवन देखते है वही उपरलिखित